

मूल पाप

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख तुलनात्मक धर्म ईसाई धर्म](#)

द्वारा: Laurence B. Brown, MD

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधति: 04 Nov 2021

मूल पाप की अवधारणा यहूदी धर्म और पूर्वी ईसाई धर्म दोनों के लिए पूरी तरह से नया है, केवल पश्चिमी चर्च में इसे माना जाता है। इसके अलावा, पाप की ईसाई और इस्लामी अवधारणाएं कुछ बारीकियों के संबंध में बिल्कुल विपरीत हैं। उदाहरण के लिए, इस्लाम में "मन में पाप करने" की कोई अवधारणा नहीं है; एक मुसलमान के लिए, एक बुरा विचार एक अच्छा काम बन जाता है जब कोई व्यक्ति उस काम को नहीं करता है। हमारे दमिाग पर हमेशा आक्रमण करने वाले बुरे विचारों पर काबू पाना और खारजि करना सजा के बजाय इनाम के योग्य माना जाता है। इस्लाम की बात करें तो एक बुरा विचार तभी पापी बनता है जब उस पर अमल किया जाता है।

अच्छे कर्मों की कल्पना करना मनुष्य के मूल स्वभाव के विपरीत है। हमारी रचना के बाद से, यद्यपि सामाजिक या धार्मिक प्रतिबंधों से बंधे नहीं हैं, तो मानवजात ने ऐतिहासिक रूप से जीवन को वासना और त्याग के साथ जिया है। इतिहास के गलियारों में लिपिते आत्म-भोग के तांडव ने न केवल व्यक्तियों और छोटे समुदायों को, बल्कि विश्व की प्रमुख शक्तियों को भी घेर लिया है, जो इतना भटक गये हैं कि वो आत्म-वनिाश तक पहुंच चुके हैं। सदोम और अमोरा इन सब में सबसे शीर्ष पर हैं, लेकिन इनके साथ ही प्राचीन दुनिया की सबसे बड़ी शक्तियाँ - ग्रीक, रोमन और फ़ारसी साम्राज्य हैं, साथ ही साथ चंगेज खान और सकिंदर महान भी हैं - निश्चिंति रूप से अपमानजनक उल्लेख हैं। लेकिन जबकि सांप्रदायिक पतन के उदाहरण असंख्य हैं, व्यक्तिगत भ्रष्टाचार भी काफी आम हैं।

इसलिए, अच्छे विचार हमेशा मानवजात की पहली प्रवृत्ति नहीं होते हैं। जैसे, इस्लामी समझ यह है कि अच्छे कर्मों की अवधारणा ही इनाम के योग्य है, भले ही उस पर अमल ना किया गया हो। जब कोई व्यक्ति वास्तव में एक अच्छे विचार पर कार्य करता है, तो अल्लाह इनाम को और भी बढ़ा देता है।

मूल पाप की अवधारणा इस्लाम में मौजूद नहीं है, और न कभी थी। ईसाई पाठकों के लिए, प्रश्न यह नहीं है कि क्या मूल पाप की अवधारणा वर्तमान समय में मौजूद है, बल्कि यह है कि क्या यह ईसाई मूल के समय अस्तित्व में था। विशेष रूप से, क्या यीशु ने इसे सिखाया था?

जाहिरा तौर पर नहीं। जसिने भी इस अवधारणा के बारे में सोचा था, वह निश्चिंता रूप से यीशु नहीं थे, क्योंकि उसने कथित तौर पर सिखाया था,

"बच्चों को रहने दो, उन्हें मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसे का ही है" (मत्ती 19:14)

हम अच्छी तरह से सोच सकते हैं कि कैसे "ऐसे लोगों के लिए" "स्वर्ग का राज्य" हो सकता है यदि बपतिस्मा न लेने वाले नरक जाने वाले हैं। बच्चे या तो मूल पाप के साथ पैदा होते हैं या स्वर्ग के राज्य के लिए बाध्य होते हैं। चर्च के पास यह दोनों तरह से नहीं हो सकता है। यह जकेल 18:20 कहता है,

"जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पति के अधर्म का भार उठाएगा और न पति पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मलेंगा।"

व्यवस्थाविवरण 24:16 इस बात को दोहराता है। आपत्त उठाई जा सकती है कि यह पुराना नियम है, लेकिन यह आदम से पुराना नहीं है! यदि मूल पाप आदम और हवा का है, तो ???? के ???? भी शास्त्र में इसे अस्वीकार नहीं किया जाएगा!

इस्लाम सिखाता है कि प्रत्येक व्यक्ति आध्यात्मिक शुद्धता की स्थिति में पैदा होता है, लेकिन पालन-पोषण और सांसारिक सुखों का आकर्षण हमें भ्रष्ट कर सकता है। फिर भी, पाप वरिसत में नहीं मिलते और, उस बात के लिए, आदम और हवा को भी उनके पापों के लिए दंडित नहीं किया जाएगा, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया है। और मानवजात किसी ऐसी चीज का उत्तराधिकारी कैसे हो सकती है, जो अब मौजूद नहीं है? नहीं, इस्लाम की दृष्टि से, हम सभी का न्याय हमारे कर्मों के अनुसार किया जाएगा, क्योंकि

"...और ये किमनुष्य के लिए वही है, जो उसने प्रयास किया" (कुरआन 53:39)

...तथा

"जसिने सीधी राह अपनायी, उसने अपने ही लिए सीधी राह अपनायी और जो सीधी राह से वचिलति हो गया, उसका (दुष्परणाम) उसी पर है और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा..." (कुरआन 17:15)

प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यों के लिए जम्मेदारी वहन करेगा, लेकिन कोई भी शशि जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में बपतस्मा ना लेने और पाप के बोझ से दबे होने के लिए नर्क में नहीं जाता है - या क्या हमें गलत जन्म कहना चाहिए?

कॉपीराइट © 2008 लॉरेस बी ब्राउन—अनुमति द्वारा उपयोग किया गया।

लेखक की वेबसाइट [www. levelt](http://www.levelt.com) है। वह तुलनात्मक धर्म की दो पुस्तकों के लेखक है, जसिका शीर्षक है ' ' , साथ ही इस्लामिकि प्राइमर, बयिरगि ट्रू वटिनेस। उनकी सभी पुस्तकें Amazon.com पर उपलब्ध हैं।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/1776>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।